Lecture No - (08)

Name of the College A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai,
L.N.M.U Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (GT)

Deptt - A.I.H.&C

Lesson / Plan for class - B.A Part II(H) Paper - IV

Date 23-06-21

Name of the topic - खजुराहो का मंदिर शैली यूनिट III

दूसरे समूह में (शिखर तथा अंगशिखर की पुनरावृति) उन मंदिरों की गणना होती है। जिनमें उरूश्रृंग गुच्छा के रूप में मीनार से जुड़े हैं। देवी जगदम्बा, चतुर्भुज, पार्श्वनाथ, विश्वनाथ तथा अंतिम सीढ़ी पर केंद्रीय महादेव मंदिरों का उल्लेख किया जाता है। मूलतः सभी एक समान बनावट तथा रचना शैली के हैं। इनमें सभी गुण विद्यमान हैं, जिनका उल्लेख किया जा चुका है। दूसरे समूह के अंतिम चार मंदिरों में अंतर गर्भगृह की परिधि में प्रदक्षिणा पथ संयुक्त मंडप है। विश्वनाथ मंडप में ही तीन ओर वातायन है। विश्वनाथ तथा चतुर्भुज मंदिरों की बनावट एक समान है। प्रत्येक कोने पर एक छोटे मंदिर बने हैं, जिससे इसे पंचायतन कहते हैं। विश्वनाथ 87 x 46 वर्गफुट में तथा चतुर्भुज मंदिर 85 x 44 वर्गफुट में विस्तृत है। विश्वनाथ मंदिर पर उत्कीर्ण लेख से ज्ञात होता है कि उसे 1000 ई० में बनाया गया था। देवी जगदम्बा का क्षेत्रफल 77 x 30 वर्गफुट है। और सभी भाग अनुपात से बने है। इसमें प्रदक्षिणा पथ का अभाव है। जैन मंदिरों की योजना भी अधिक भिन्न नहीं है। बाह्य दीवार के पुश्ता तथा ताख में मूर्तियाँ बैठाई गई है। उनसे मंदिरों की बनावट में कोई रुकावट नहीं पैदा हो सकी। इसी कारण प्रक्षेपण मध्य रीति से रखे हैं।

P.T.O

यहाँ स्तंभयुक्त बड़े भाव ताव में प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित है। दूसरा जैन मंदिर जिननाथ का है जो 60 फुट लंबा तथा 30 फुट चौड़ा है। प्रत्येक दिशा में प्रक्षेपण के कारण कुछ भाग बाहर निकले है। अंदर एक आयताकार कमरा है। जिसमें दो खंड है (1) गर्भगृह (2) स्तंभयुक्त बरामदा। इन दोनों को घेरे हुए प्रदक्षिणा पथ है।

खजुराहो का सबसे प्रसिद्ध मंदिर कंदरिया महादेव का है। संभवतः यह नाम (कंदरिया) कंदर्पी का विकृत रूप है। कंदर्प महादेव का दूसरा नाम है, और शिव ने उसका विनाश किया, अतएव कंदर्पी कहलाए। उस कथानक के स्मरण में कंदरिया महादेव का मंदिर निर्मित हुआ था। इसकी लंबाई 102 फुट चौड़ा 66 फुट तथा शिखर की ऊँचाई 101 फुट है। मंदिर की प्रत्येक इंच दीवार आकृतियों से भरी है। उस खुदाई में मकर, विद्याधर, संगीतज्ञ, वाद्य तथा कामासक्त मिथुन आकृतियाँ स्पष्ट है। बाह्य भाग में देवी, देवता, प्रेमी एवं प्रेमिका तथा देवदूत के रूपचित्र उत्कीर्ण है। यदि कंदरिया मंदिर के अर्द्धमंदिर के स्वरूप को सोचे, तो प्रकट होता है कि प्रस्तर की रागीनी की एक विशाल राशि है जो क्रमशः चोटी की ओर होती जाती है। इसके गर्भगृह की स्थापत्य योजना मंदिर की पूर्णता पर प्रकाश डालती है, कंदरिया महादेव मंदिर में तोरणों के आसपास रूपचित्र खुदे है जो आकर्षक है। इसमें स्थापत्यकला की सुंदरता ही नहीं मिली। बल्कि प्रस्तर आकृतियों में जीवन भी भर दिया गया है। रूपचित्र सजीव और प्राणदायक प्रतीत होते है।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
Date - 23-06-21